यादव ने मुख्य वक्ता

अमर उजाला कानपुर 10/02/2023

दलहन की अच्छी प्रजातियां की जाएंगी विकसि

उद्यमी भी तैयार करेगा दलहन अनुसंधान, प्रजातियां भी बढ़ाएगा

संवाद न्यूज एजेंसी

विश्व दलहन दिवस पर विशेष

कानपुर। दालों की प्रजातियां विकसित करने में देश में अपना डंका बजाने वाला भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) का कानपुर स्थित भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान दालों का मूल्य संवर्धन करेगा।

यहां के वैज्ञानिकों का प्रयास है कि दाल और छिलकों से तैयार उत्पाद बाजार में लाएं, जिससे किसानों को लाभ हो। इसके अलावा चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) का दलहन अनुभाग दालों की ऐसी प्रजातियां विकसित करने की तैयारी में है, जो उत्पादन बढ़ाए, रोग अवरोधी और बदलती जलवायु में फल फूल सके।

आईआईपीआर तैयार करेगा उद्यमी

आईआईपीआर दाल का मूल्य संवर्धन करके उद्यमी तैयार करेगा। संस्थान में इस काम के लिए एग्री बिजनेस इंक्यूबेशन (एबीआई) की स्थापना की गई है। एबीआई प्रभारी डॉ. उमा शाह ने बताया कि उनकी यूनिट के पास 17 तकनीकें है, जिसमें दालों के बीज उत्पादन, बायोफर्टिलाइजर, बायोपेस्टीसाइट, दाल के प्रसंस्करण और दाल का मूल्य संवर्धन शामिल है। संस्थान में दाल के छिलके से बिस्कुट और केक तैयार किया चुका है। महोदया नाम की कंपनी ने एबीआई से जुड़कर दाल के हाई फाइबर और हाई प्रोटीन बिस्कुट बनाया है। एबीआई से जुड़ने के लिए 40 हजार फीस अदा करनी होती है।

सीएसए बढ़ाएगा दालों का उत्पादन

विश्व स्वास्थ्य संगठन प्रति व्यक्ति रोजाना 51 ग्राम दाल खाने को पोषण युक्त बताता है। सीएसए के दलहन अनुभाग के अध्यक्ष और अर्थ वनस्पति विद डॉ. सर्वेंद्र कुमार गुप्ता ने बताया कि संस्थान के वैज्ञानिक ऐसी प्रजातियां विकसित करने पर काम कर रहे हैं जो उत्पादन बढाएं, रोग अवरोधी और जलवायु परिवर्तन में खुद को टिका सकें। मसूर, मूंग, चना, उड़द, अरहर और सफेद मटर की प्रजातियों पर डॉ. गीता राय, डॉ. मनोज कटियार और डॉ. अरविंद श्रीवास्तव काम कर रहे हैं।

इन प्रजातियों को किया विकसित

- **आईआईपीआर :** दलहन के क्षेत्र में आईआईपीआर 10 साल में 49 प्रजातियां विकसित कर चुका है। इनमें जल्दी पकने, से बोई जाने वाली और कम पानी में पकने समेत कई तरह की विशेषताएं शामिल हैं। काबुली चने की आईपीसी 2006-77, आईपीसी 2011-112 (केशव), आईपीसी 2007-28 (अटल) प्रमुख है। मटर की आईपीएफ 16-13 (हरित), मसूर की आईपीएल 321, मूंग की आईपीएम 512-1 (सूर्या) और उड़द की पीडीयू 1 (बसंत बहार) समेत कई प्रजातियां विकसित की जा चुकी हैं।
- **सीएसए :** सीएसए की ओर से अभी तक दलहन के क्षेत्र में 60 प्रजातियों का विकसित किया जा चुका है। इनमें उत्पादन बढ़ना, कम पानी वाले क्षेत्र में विकसित होना, देर से बोए जाना और ज्यादा प्रोटीन के गुण शामिल हैं। यहां से चने की उदय, मटर की शिखा, मसूर की केएलएस 122, उड़द की शेखर एक, मूंग की केएम 2328, अरहर की आजाद, लोबिया की लोबिया 5269, सोयाबीन की टाइप 49, मोठ की टाइप 1 और ग्वार की टाइप एक और दो प्रजाति शामिल हैं।

दैनिक नगर छाया आप की आवाज..... WWW.nagarchhaya.com | कानपुर छाया | कानपुर 10 फरवरी, 2023 | 5

कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों को किया जागरूक

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के कृषि वैज्ञानिकों द्वारा जनपद में रसायन मुक्त सब्जी उत्पादन के लिए प्रशिक्षण के माध्यम से कृषकों को जागरूक किया जा रहा है। इसी कड़ी में आज झींझक विकासखंड के गांव मियानी मदारपुर में कृषकों हेतु एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में कृषि वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने कहा कि जहर मुक्त खेती को भविष्य की खेती माना जा रहा है। पोषण युक्त भोजन से लोगों के पेट भरने का यह एक बेहतर विकल्प है। इसलिए पूरे जनपद में जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए कृषकों की आय बढ़ाने तथा कृषि को और अधिक टिकाऊ बनाने के लिए जैविक कृषि यानी जहर मुक्त खेती हेतु किसानों को जागरूक किया जा रहा है। इस अवसर पर उद्यान वैज्ञानिक डॉ अरुण कुमार सिंह ने सब्जी मटर, मूली, टमाटर ,गोभी, बंद गोभी, पत्ता गोभी इत्यादि सब्जियों की वैज्ञानिक विधि के बारे में विस्तार से किसानों को जानकारी दी। डॉ विनोद प्रकाश ने सब्जी की खेती के तरीके को बढ़ावा देने की पहल की है। क्योंकि यह पर्यावरण अनुकूल और पारिस्थितिकीय रूप से टिकाऊ होने के अलावा कृषक समुदाय के सामाजिक, आर्थिक विकास के उद्देश्य को पूरा करता है। इस अवसर पर डॉ सुशील कुमार यादव ने कार्यक्रम की विस्तार से रूपरेखा प्रस्तुत की।इस अवसर पर प्रगतिशील कृषक सत्यपाल सिंह, अरविंद कुमार ,राजेश कुमार एवं फूल सिंह सहित 50 से अधिक किसान उपस्थित रहे।

न्दी दैनिक)
R.N.I. No. Uttbin/2018/7673
(गांव देहात की खबर, शहर पर भी नजर)
दि ग्राम टुडे
उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश से एक साथ प्रसारित
04 अंक : 311 देहरादून, शुक्रवार, 10 फरवरी 2023 मूल्य : 2 रुपये पृष्ठ - 8

कृषि वैज्ञानिकों द्वारा जनपद में जहर मुक्त सब्जी उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु, गांव-गांव किसानों को किया जा रहा जागरूक

दि ग्राम टुडे, कानपुर।

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के कृषि वैज्ञानिकों द्वारा जनपद में रसायन मुक्त सब्जी उत्पादन के लिए प्रशिक्षण के माध्यम से कृषको को जागरूक किया जा रहा है। इसी कड़ी में आज झींझक विकासखंड के गांव मियानी मदारपुर में कृषकों हेतु एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में कृषि वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने कहा कि जहर मुक्त खेती को भविष्य की खेती माना जा रहा है। पोषण युक्त भोजन से लोगों के पेट भरने का यह एक बेहतर विकल्प है।

इसलिए पूरे जनपद में जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए कृषकों की आय बढ़ाने तथा कृषि को और अधिक टिकाऊ बनाने के लिए जैविक कृषि यानी जहर मुक्त खेती हेतु किसानों को जागरूक किया जा रहा है। इस अवसर पर उद्यान वैज्ञानिक डॉ अरुण कुमार सिंह ने सब्जी मटर, मूली, टमाटर ,गोभी, बंद गोभी, पत्ता गोभी इत्यादि सब्जियों की वैज्ञानिक विधि के बारे में विस्तार से किसानों को जानकारी दी। डॉ विनोद प्रकाश में सब्जी की खेती के तरीके को बढ़ावा देने की पहल की है। क्योंकि यह पर्यावरण अनुकूल और पारिस्थितिकीय रूप से टिकाऊ होने के अलावा कृषक समुदाय के सामाजिक, आर्थिक विकास के उद्देश्य को पूरा करता है। इस अवसर पर डॉ सुशील कुमार यादव ने कार्यक्रम की विस्तार से रूपरेखा प्रस्तुत की।इस अवसर पर प्रगतिशील कृषक सत्यपाल सिंह, अरविंद कुमार ,राजेश कुमार एवं फूल सिंह सहित 50 से अधिक किसान उपस्थिति रहे।

लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक

जन एक्सप्रेस

लखनऊ | वर्ष: 14 | अंक: 120 मूल्य: 3.00/- पेज : 12 शुक्रवार 10 फरवरी, 2023

रसायन मुक्त सब्जी उत्पादन के लिए किया जागरूक

जन एक्सप्रेस, कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के कृषि वैज्ञानिकों द्वारा जनपद में रसायन मुक्त सब्जी उत्पादन के लिए प्रशिक्षण के माध्यम से कृषकों को जागरूक किया जा रहा है। बीते दिन गुरुवार को झींझक विकासखंड के गांव मियानी मदारपुर में कृषकों के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कृषि वैज्ञानिक डॉ.खलील खान ने कहा कि जहर मुक्त खेती को भविष्य की खेती माना जा रहा है। प्रगतिशील कृषक सत्यपाल सिंह, अरविंद कुमार, राजेश कुमार एवं फूल सिंह सहित 50 से अधिक किसान मौजूद रहे।

जहर मुक्त सब्जी उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु, गांव-गांव किसानों को किया जा रहा जागरूक

कानपुर । सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के कृषि वैज्ञानिकों द्वारा जनपद में रसायन मुक्त सब्जी उत्पादन के लिए प्रशिक्षण के माध्यम से कृषकों को जागरूक किया जा रहा है। इसी कड़ी में आज झींझक विकासखंड के गांव मियानी मदारपुर में कृषकों हेतु एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में कृषि वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने कहा कि जहर मुक्त खेती को भविष्य की खेती माना जा रहा है। पोषण युक्त भोजन से लोगों के पेट भरने का यह एक बेहतर विकल्प है। इसलिए पूरे जनपद में जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए कृषकों की आय बढ़ाने तथा कृषि को और अधिक टिकाऊ बनाने के लिए जैविक कृषि यानी जहर मुक्त खेती हेतु किसानों को जागरूक किया जा रहा है। इस अवसर पर उद्यान वैज्ञानिक डॉ अरुण कुमार सिंह ने सब्जी मटर, मूली, टमाटर गोभी, बंद गोभी, पत्ता गोभी इत्यादि सब्जियों की वैज्ञानिक विधि के बारे

में विस्तार से किसानों को जानकारी दी। डॉ विनोद प्रकाश में सब्जी की खेती के तरीके को बढ़ावा देने की पहल की है। क्योंकि यह पर्यावरण अनुकूल और पारिस्थितिकीय रूप से टिकाऊ होने के अलावा कृषक समुदाय के सामाजिक आर्थिक विकास के उद्देश्य को पूरा करता है। इस अवसर पर डॉ सुशील कुमार यादव ने कार्यक्रम की विस्तार से रूपरेखा प्रस्तुत की।इस अवसर पर प्रगतिशील कृषक सत्यपाल सिंह, अरविंद कुमार ,राजेश कुमार एवं फूल सिंह सहित 50 से अधिक किसान उपस्थित रहे।

लखनऊ, बरेली, मुरादाबाद, हल्द्वानी, अयोध्या व कानपुर से प्रकाशित

फाल्गुन कृष्ण पक्ष चतुर्थी 07:58 उपरांत पंचमी विक्रम संवत 2079

अमृत विचार

एक सम्पूर्ण अखबार

वर्ष 1, अंक 168, पृष्ठ 16, मूल्य: 5 रुपये

कानपुर, शुक्रवार, 10 फरवरी 2023

www.amritvichar.com

दम पर भारत मजबूत...15

करीना ने बेटे जेह के साथ शेयर

अंतराष्ट्रीय दलहन दिवस | प्रति व्यक्ति प्रतिदिन 50 ग्राम दाल की होती है आवश्यकता, सीएसए विवि के शोध में विकसित की गईं दालों की कई प्रजातियां

शाकाहारी भोजन में प्रोटीन पहुंचाने का साधन हैं दालें

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। भोजन की थाली में दलहनी फसलों का ज्यादा महत्व है। देश में 90 फीसद से अधिक लोग शाकाहारी भोजन लेते हैं और शाकाहारी भोजन में प्रोटीन पहुंचाने का एकमात्र साधन दालें हैं। ऐसे में सीएसए विश्वविद्यालय में दलहनी फसलों पर शोध से कई नई प्रजातियां विकसित की गई हैं, जिसमें चना, मटर, मसूर, उड़द, मूंग व अरहर की प्रजातियां शामिल हैं।

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के प्रो. अखिलेश मिश्रा ने कहा आज के दौर में दलहनी फसलों का उत्पादन बढ़ा है। नई प्रजातियां जो किसानों के लिए विकसित की जाती हैं, उसमें पुरानी प्रजातियों की अपेक्षा न्यूनतम दस प्रतिशत अधिक उत्पादन की क्षमता होती है। कहा डब्ल्यूएचओ के मानक के अनुसार मनुष्य को शारीरिक आवश्यकता को पूरा करने के लिए प्रति व्यक्ति प्रतिदिन 50 ग्राम दाल की आवश्यकता होती है, लेकिन आंकड़ों के आधार पर लगभग 39 ग्राम प्रति व्यक्ति प्रतिदिन दाल उपलब्ध हैं। यह कमी पूरा करने के लिए अभी और शोध की आवश्यकता है। फसल का उत्पादन बढ़ सके और वर्तमान परिस्थितियों में जो दलहनी फसलों की मांग है उसको पूरा किया जा सके। देश

में विभिन्न मौसमों अलग प्रकार की दालें उगाई जाती हैं। जायद के मौसम में उड़द और मूंग, खरीफ के मौसम में अरहर, उड़द और मूंग, रबी के मौसम में चना, मटर, मसूर जैसी महत्वपूर्ण फसलों का उत्पादन होता है। प्रो. अखिलेश ने कहा दलहनी फसलों की जड़ों में पाए जाने वाले राइजोबियम बैक्टीरिया द्वारा वायुमंडल से जो नाइट्रोजन भूमि में फिक्स की जाती है। जिससे दलहनी फसलें भूमि के लिए भी एक अच्छा पोषण और मजबूत आधार तैयार करते हैं। कहा विश्वविद्यालय में लगातार शोध से दलहनी फसलों का उत्पादन बढ़ा है। जिससे की मांग और पूर्ति के अनुपात में अपेक्षित सुधार हुआ है।

विश्वविद्यालय में अभी और शोध कार्य चल रहे हैं, जानकारों की माने तो जल्द ही किसानों के लिए और भी प्रजातियां बाजार में आएंगी।

विश्वविद्यालय के शोध में खोजी गई नई प्रजातियां

दाल	प्रजातियां
चना	केडब्लूआर- 108, केजीडी- 1168, केपीजी-59(उदय)
मटर	इंद्र और जय
मसूर	के-75, मल्लिका, आजाद मसूर- 1, केएलएस- 218
उड़द	शेखर- 1, शेखर- 2, आजाद- 2, आजाद- 3
मूंग	केएम- 2241, केएम- 1995, श्वेता
अरहर	अमर और आजाद

जहर मुक्त सब्जी उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु किसानों को किया जा रहा जागरूक

स्वतंत्र भारत संवाददाता

कानपुर । सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के कृषि वैज्ञानिकों द्वारा जनपद में रसायन मुक्त सब्जी उत्पादन के लिए प्रशिक्षण के माध्यम से कृषकों को जागरूक किया जा रहा है। इसी कड़ी में आज झींझक विकासखंड के गांव मियानी मदारपुर में कृषकों हेतु एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में कृषि वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने कहा कि जहर मुक्त खेती को भविष्य की खेती माना जा रहा है। पोषण युक्त भोजन से लोगों के पेट भरने का यह एक बेहतर विकल्प है। इसलिए पूरे जनपद में जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए कृषकों की

आय बढ़ाने तथा कृषि को और अधिक टिकाऊ बनाने के लिए जैविक कृषि यानी जहर मुक्त खेती हेतु किसानों को जागरूक किया जा रहा है। इस अवसर पर उद्यान वैज्ञानिक डॉ अरुण कुमार सिंह ने सब्जी मटर, मूली, टमाटर गोभी, बंद गोभी, पत्ता गोभी इत्यादि सब्जियों की वैज्ञानिक विधि के बारे में विस्तार से किसानों को जानकारी दी। डॉ विनोद प्रकाश ने सब्जी की खेती के तरीके को बढ़ावा देने की पहल की है। क्योंकि यह पर्यावरण अनुकूल और पारिस्थितिकीय रूप से टिकाऊ होने के अलावा कृषक समुदाय के सामाजिक आर्थिक विकास के उद्देश्य को पूरा करता है। इस अवसर पर डॉ सुशील कुमार यादव ने कार्यक्रम की विस्तार से रूपरेखा प्रस्तुत की। इस अवसर पर प्रगति शील कृषक सत्यपाल सिंह, अरविंद कुमार ,राजेश कुमार एवं फूल सिंह सहित 5 से अधिक किसान उपस्थित रहे।

जैविक कृषि से बढ़ेगी किसानों की आय

किसानों को प्रशिक्षण देते कृषि वैज्ञानिक।

कानपुर, 9 फरवरी। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के कृषि वैज्ञानिकों द्वारा जनपद में रसायन मुक्त सब्जी उत्पादन के लिए प्रशिक्षण के माध्यम से कृषकों को जागरूक किया जा रहा है। इसी कड़ी में गुरुवार को झींझक विकासखंड के गांव मियानी मदारपुर में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में कृषि वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने कहा कि जहर मुक्त खेती को भविष्य की खेती माना जा रहा है। पोषण युक्त भोजन से लोगों के पेट भरने का यह एक बेहतर विकल्प है। इसलिए पूरे जनपद में जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए कृषकों की आय बढ़ाने तथा कृषि को और अधिक टिकाऊ बनाने के लिए जैविक कृषि यानी जहर मुक्त खेती हेतु किसानों को जागरूक किया जा रहा है। उद्यान वैज्ञानिक डॉ. अरुण कुमार सिंह ने सब्जी, मटर, मूली, टमाटर, फूल गोभी एवं पत्ता गोभी आदि सब्जियों की वैज्ञानिक विधि के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इस अवसर पर प्रगतिशील कृषक सत्यपाल सिंह, अरविंद कुमार, राजेश कुमार एवं फूल सिंह सहित 50 से अधिक किसान उपस्थित रहे।

कृषि वैज्ञानिकों द्वारा जनपद में जहर मुक्त सब्जी उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु, गांव-गांव किसानों को किया जा रहा जागरूक

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के कृषि वैज्ञानिकों द्वारा जनपद में रसायन मुक्त सब्जी उत्पादन के लिए प्रशिक्षण के माध्यम से कृषकों को जागरूक किया जा रहा है। इसी कड़ी में आज झींझक विकासखंड के गांव मियानी मदारपुर में कृषकों हेतु एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में कृषि वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने कहा कि जहर मुक्त खेती को भविष्य की खेती माना जा रहा है। पोषण युक्त भोजन से लोगों के पेट भरने का यह एक बेहतर विकल्प है। इसलिए पूरे जनपद में जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए कृषकों की आय बढ़ाने तथा कृषि को और अधिक टिकाऊ बनाने के लिए जैविक कृषि यानी जहर मुक्त खेती हेतु किसानों को जागरूक किया जा रहा है। इस अवसर पर उद्यान वैज्ञानिक डॉ अरुण कुमार सिंह ने सब्जी मटर, मूली, टमाटर, गोभी, बंद गोभी, पत्ता गोभी इत्यादि सब्जियों की वैज्ञानिक विधि के बारे में विस्तार से किसानों को जानकारी दी। डॉ विनोद प्रकाश ने सब्जी की खेती के तरीके को बढ़ावा देने की पहल की है। क्योंकि यह पर्यावरण अनुकूल और पारिस्थितिकीय रूप से टिकाऊ होने के अलावा कृषक समुदाय के सामाजिक, आर्थिक विकास के उद्देश्य को पूरा करता है। इस अवसर पर डॉ सुशील कुमार यादव ने कार्यक्रम की विस्तार से रूपरेखा प्रस्तुत की। इस अवसर पर प्रगतिशील कृषक सत्यपाल सिंह, अरविंद कुमार, राजेश कुमार एवं फूल सिंह सहित 50 से अधिक किसान उपस्थित रहे।

दैनिक जागरण कानपुर 10/02/2023

दालों की नई प्रजातियों में आयरन और जिंक का भी खजाना

विश्व दलहन दिवस विशेष

अखिलेश तिवारी ● कानपुर

- कृषि विज्ञानियों ने विकसित की दलहन की नई प्रजातियां, 10 वर्षों में तेजी से बढ़ी पैदावार
- दलहन उत्पादन में आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ा प्रदेश, यहां दालों का उत्पादन राष्ट्रीय औसत से ज्यादा
- कम समयावधि में अधिक पैदावार वाली दाल की फसलों को बोने के लिए फैलाई जा रही जागरूकता

दालें अब केवल प्रोटीन का ही स्रोत नहीं रहीं। इनसे आयरन और जिंक भी प्रचुर मात्रा में मिल रहा है। मटर पसंद करने वालों के लिए पकने के बाद भी हरे रंग की मटर हाजिर है। यह सब कुछ किया है देश के कृषि विज्ञानियों ने। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय एवं भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान के विज्ञानियों ने 10 साल में दलहन की कई नई प्रजातियां विकसित की हैं। इससे दलहन के उत्पादन में यूपी तेजी से आगे बढ़ा है। यहां दाल की उत्पादकता का औसत राष्ट्रीय दर से भी ज्यादा है।

दालों से मिलने वाले पोषण की ओर पूरी दुनिया का ध्यान आकर्षित करने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष 2016 को अंतरराष्ट्रीय दलहन वर्ष के तौर पर मनाया। इसके बाद से ही अब हर साल 10 फरवरी को विश्व दलहन दिवस मनाया जा रहा है। दालों के उत्पादन में पिछले कुछ वर्षों में भारत आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ा है। विज्ञानियों ने किसानों और उपभोक्ताओं की जरूरत को ध्यान में रखकर अनुसंधान किए और इसके अच्छे परिणाम भी अब दिखने लगे हैं। अधिक उपज वाली दलहन प्रजातियों के साथ ही प्रोटीन, आयरन व जिंक की प्रचुर मात्रा वाली प्रजातियों को विकसित करने में विज्ञानियों को सफलता मिली है। सूखने पर भी हरी रहती है मटर: सीएसए के विज्ञानियों ने बायो फोर्टिफाइड दलहन के विकास पर जोर दिया और मसूर दाल की प्रजाति आईपीएल 220 विकसित की है। इसमें आयरन और जिंक बहुत ज्यादा है। मटर की ऐसी प्रजाति विकसित की है जिसके दाने पकने के बाद सफेद न रहकर हरे रहते हैं।

277 लाख टन दालों की पैदावार का इस वर्ष का है अनुमान

52 ग्राम दाल चाहिए हर व्यक्ति को

इंडियन काउंसिल आफ मेडिकल रिसर्च (आईसीएमआर) ने प्रति दिन प्रति व्यक्ति के लिए औसतन 52 ग्राम दाल की मात्रा निर्धारित की है। कृषि विज्ञानियों के अनुसार, इस वर्ष दालों की पैदावार 277.5 लाख टन होने की उम्मीद है, जबकि देश की जनसंख्या के अनुसार 280 लाख टन दलहन की आवश्यकता होगी।

उप्र में दलहन उत्पादन

22.90 लाख हेक्टेयर में दलहन की खेती की जाती है

224.07 लाख मीट्रिक टन दलहन का उत्पादन होता है

10.51 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है प्रदेश में दलहन उत्पादकता

885 किग्रा प्रति हेक्टेयर है दलहन की राष्ट्रीय उत्पादकता

> रोग मुक्त और अधिक उपज वाली प्रजातियों को अपनाकर यूपी के किसान राष्ट्रीय औसत से भी ज्यादा उत्पादन कर रहे हैं। दलहन पर नए अनुसंधान भी हो रहे हैं। इससे प्रोटीन, आयरन व जिंक दालों में प्रचुर मात्रा में मिलने लगा है।
>
> डा. मनोज कटियार, वरिष्ठ विज्ञानी, सीएसए

> दलहन के क्षेत्र में देश आत्मनिर्भर हो रहा है। कई राज्यों में किसान रबी और खरीफ सीजन के बीच के समय में किसी भी फसल की बुवाई नहीं करते हैं, अब वहां कम समयावधि वाली दालों की प्रजातियां बोने के लिए जागरूकता फैलाई जा रही है।
>
> डा. बंसा सिंह, निदेशक, आइआइपीआर

हिंदुस्तान कानपुर 10/02/2023

30 साल से श्वेता और के-851 का जलवा

विश्व दाल दिवस

■ अभिषेक सिंह

कानपुर। कानपुर की श्वेता और के-851 का जलवा पिछले 30 सालों से बरकरार है। मूंग दाल की ये दोनों प्रजातियां चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) के वैज्ञानिकों ने विकसित की है। इनकी मांग उत्तर प्रदेश ही नहीं, बल्कि पूरे भारत में है। आमतौर पर 15 से 20 सालों में दाल की पुरानी प्रजातियों की जगह नई प्रजातियां लेने लगती है, लेकिन इन दोनों प्रजातियों की अब तक किसानों के बीच मांग बरकरार है।

विवि के रिटायर वैज्ञानिक डॉ. ईएन पांडेय ने करीब 32 साल पहले मूंग की नई प्रजाति के-851 और डॉ. मनोज कटियार ने करीब 25 साल पहले श्वेता प्रजाति विकसित की। पांच से सात साल की लंबी रिसर्च के बाद ये दोनों प्रजातियां विकसित की गई थीं। डॉ. मनोज कटियार ने बताया कि के-851 मोटे दाने वाली प्रजाति है और श्वेता मध्यम दाने वाली प्रजाति है। दोनों की खासियत है कि ये सिर्फ उत्तर प्रदेश नहीं, बल्कि पूरे भारत में सफल हैं। यह हर मिट्टी व जलवायु में अच्छा उत्पादन देती हैं। 23 से 24 फीसदी प्रोटीन, 62 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 132 मिग्रा कैल्शियम, 189 मिग्रा मैग्नीशियम, 367 मिग्रा फास्फोरस, अमीनो एसिड, एंडी ऑक्सीडेंट, एंटी माइक्रोबियल, कार्बनिक एसिड।

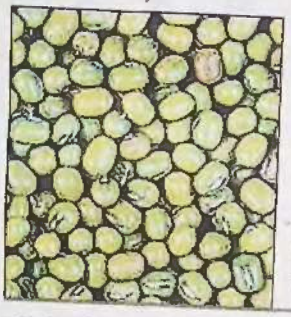

इन प्रदेशों में है अब भी मांग

डॉ. मनोज कटियार ने बताया कि श्वेता का उत्पादन खरीफ व जायद दोनों मौसम में किया जा सकता है। इसकी मांग मुख्य रूप से उप्र, बिहार, जम्मू-कश्मीर, त्रिपुरा, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, राजस्थान, महाराष्ट्र आदि में अधिक है। वहीं, के-851 की मांग यूपी के अलावा मध्य प्रदेश, पंजाब, राजस्थान समेत पूरे सेंट्रल जोन में है।

अधिक उत्पादन की वजह

डॉ. मनोज कटियार ने बताया कि श्वेता प्रजाति 60 से 65 दिन की है। इसका उत्पादन भी 12 से 15 कुंतल प्रति हेक्टेयर है। उन्होंने बताया कि मूंग की सम्राट समेत कई प्रजातियों की जगह पर नई प्रजातियां आ गई हैं मगर श्वेता व के-851 प्रजाति को 30 साल बीत चुके हैं और इनकी मांग निरंतर वैसे ही बनी है।